



एक व्यक्ति किसी विचार के लिए मर सकता है, लेकिन वह विचार उसकी मृत्यु के बाद हजारों लोगों के जीवन में अवतरित होगा।

—सुभाष चंद्र बोस

मूल्य
₹ 3/-

जिद...सच की

● वर्ष: 12 ● अंक 254 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 23 अक्टूबर, 2026

चोट के चलते दूसरे टी-20... **7** कोंकरोच के कोप से चारों ओर... **3** आजम खां के परिवार पर झूठे... **2**

पूरे देश में चल रहे वोटर लिस्ट के खेल की खुली पोल, एसडीएम पर एफआईआर दर्ज

- » पहले मांगते थे सबूत, अब दो जवाब दिल्ली से पीलीभीत तक मतदाता सूचियों पर सवाल
- » फिर बहस के केंद्र में चुनाव आयोग की जवाबदेही
- » लोकतंत्र में मतदाता सूची किसी सरकार, विपक्ष या चुनाव आयोग की निजी संपत्ति नहीं

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। वोट चोरी, मतदाता सूचियों में हेर फेर और वोट डालने के अधिकार को लेकर चल रहे संघर्षों के बीच देश की सबसे बड़ी खबर पीलीभीत से। पीलीभीत में पकड़ में आयी मतदाता सूचियों में हेर फेर से लोकतंत्र के जंगल में आग सी लग गयी है और इस गड़बड़झाले को विपक्षी पार्टियां अपने आरोपों के पुख्ता सबूत के तौर पर पेश कर रही है।

हालांकि इस पूरे प्रकरण में जेम्स बांड वाली भूमिका समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक हेमराज वर्मा ने निभाई थी लेकिन

और आखिरी सवाल मतदाता सूची पर भरोसा कैसे बचेगा?

राहुल गांधी और दूसरे विपक्षी नेताओं ने मतदाता सूची और चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ियों को लेकर लगातार सवाल उठाए हैं। चुनाव आयोग ने आरोपों को चुनौती दी है और एसआईआर का बचाव करते हुए कहा है कि इसका उद्देश्य मतदाता सूची को शुद्ध करना है। अब पीलीभीत में एफआईआर और दोबारा जांच का आदेश सामने आने के बाद जरूरत है कि जांच पूरी पारदर्शिता से हो। जहां गलतियां हुई हैं उन्हें सुधारा जाए। जहां नियमों का उल्लंघन हुआ है वहां जिम्मेदारी तय हो। लोकतंत्र में मतदाता सूची किसी सरकार विपक्ष या चुनाव आयोग की निजी संपत्ति नहीं है। वह नागरिक के मतदान के अधिकार का आधार है। इसलिए उसकी हर प्रविष्टि का सही होना हर बदलाव का रिकॉर्ड उपलब्ध होना और हर शिकायत की निष्पक्ष जांच होना जरूरी है।



अपनी आक्रमक नीति के चलते इस पूरे मुद्दे को कांग्रेस ले उड़ी और प्रेस कांफ्रेंस के जरिये ऐसी चिंगारी लगाई कि चुनाव आयोग को जवाब देते नहीं बन रहा है। पहली बार विपक्ष के आरोपों

की जद में दो एसडीएम और एक कंप्यूटर आपरेटर पर एफआईआर दर्ज की जा चुकी है। चुनाव आयोग ने पूरे प्रदेश की मतदाता सूचियों को नवंबर से पहले फिर से खंगाले जाने के आदेश दिये हैं।

10470

फॉर्मों की दोबारा जांच के आदेश दिए गए

पूरी कहानी का सबसे ठोस और ताजा सिरा उत्तर प्रदेश के पीलीभीत से आया है

पीलीभीत सदर विधानसभा क्षेत्र की मतदाता सूची में संशोधन को लेकर शिकायतों के बाद जांच कराई गई। जिला निर्वाचन अधिकारी के मुताबिक 31 मई से 29 अगस्त 2026 के बीच मतदाता विवरण में संशोधन के लिए कुल 13,779 फॉर्म-8 की प्रविष्टियां की गई थीं। इनमें 10,470 फॉर्म स्वीकृत और 3,309 अस्वीकृत किए गए। जांच में इन फॉर्मों से जुड़े ऑनलाइन और ऑफलाइन रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं मिले। इसके बाद स्वीकृत 10,470 फॉर्मों की दोबारा जांच के आदेश दिए गए। मामले में तत्कालीन निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की भूमिका की जांच हुई और दो एसडीएम तथा एक कंप्यूटर सहायक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। संबंधित अधिकारियों को चुनावी

दायित्वों से हटाने और विभागीय कार्रवाई के कदम भी उठाए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि जब मतदाता सूची में सुधार के लिए निर्धारित प्रक्रिया है तो उसके रिकॉर्ड सुरक्षित रखने और हर संशोधन की जांच सुनिश्चित करने की व्यवस्था कितनी मजबूत है। क्योंकि दिल्ली से बिहार, बंगाल, पंजाब और पीलीभीत तक की घटनाएं एक जैसी नहीं हैं। कहीं नाम हटाए जाने पर विवाद हुआ कहीं प्रविष्टियों की विसंगतियां सामने आईं तो कहीं अधिकारियों पर कार्रवाई हुई और कहीं प्रशासन ने गलती सुधारने की बात कही। इसलिए पूरे देश में एक ही निष्कर्ष निकालने के बजाय हर मामले की अलग जांच और उसके निष्कर्ष सार्वजनिक करना ज्यादा जरूरी है।

चुनाव आयोग के सामने कुछ स्पष्ट सवाल हैं

सवाल नम्बर एक- क्या मतदाता सूची में किए गए हर संशोधन का मूल आवेदन और संबंधित रिकॉर्ड सुरक्षित रखा जा रहा है?

सवाल नम्बर दो- जिन मतदाताओं के नाम, पिता का नाम, पहचान संख्या या अन्य विवरण में विसंगति है उन्हें समय रहते कैसे सूचना दी जाएगी?

सवाल नम्बर तीन- नाम हटाने या बदलने के मामलों में प्रभावित नागरिक को सुनवाई और सुधार का पर्याप्त अवसर कैसे मिलेगा?

सवाल नम्बर चार- जिन मामलों में अनियमितता की जांच चल रही है वहां जांच के निष्कर्ष और सुधारात्मक कार्रवाई सार्वजनिक कब की जाएगी?

सवाल नम्बर पांच- क्या अलग-अलग राज्यों में सामने आई शिकायतों का तुलनात्मक



विवरण सार्वजनिक किया जाएगा ताकि गलतियों और वास्तविक अनियमितताओं के बीच अंतर साफ हो सके?

राहुल गांधी लगा रहे हैं लंबे समय से वोट चोरी के आरोप!

देश में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण लेकर विपक्ष लंबे समय से सवाल उठा रहा है। राहुल गांधी ने चुनावी प्रक्रिया में गड़बड़ियों, संदिग्ध मतदाता प्रविष्टियों और वोट चोरी के आरोप लगाए। चुनाव आयोग ने इन

आरोपों को चुनौती देते हुए सबूत मांगे और अपनी प्रक्रिया का बचाव किया। लेकिन अब उत्तर प्रदेश के पीलीभीत से मतदाता सूची में गंभीर अनियमितताओं का ऐसा मामला सामने आया है जिसमें जांच के बाद दो एसडीएम और एक कंप्यूटर सहायक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। यही वह मोड़ है जहां सवालों का दायरा बढ़ गया है कि क्या मतदाता सूची तैयार करने और उसमें संशोधन करने की व्यवस्था में निगरानी पर्याप्त है? क्या गलत

प्रविष्टियों की पहचान समय रहते हो रही है? और अगर रिकॉर्ड ही उपलब्ध न हों तो नागरिक कैसे भरोसा करे कि उसकी पहचान सुरक्षित है? पीलीभीत का मामला अपने आप में देशव्यापी वोट चोरी के आरोपों को प्रमाणित करने की कड़ी में एक दस्तावेजी सबूत के तौर पर सामने आया है और सवाल उठा रहा है कि मतदाता सूची से जुड़ी शिकायतों की जांच दस्तावेजों की उपलब्धता और जिम्मेदारी तय करने की प्रक्रिया कितनी महत्वपूर्ण है।

आजम खां के परिवार पर झूठे मुकदमे लगवाए गए : अखिलेश

» सपा प्रमुख ने भाजपा सरकार पर साधा निशाना
» 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी का स्पष्ट और सीधा लक्ष्य भारतीय जनता पार्टी को हराना है। भाजपा के लोगों का पढ़ाई-लिखाई और इल्म (शिक्षा) से कोई लेना-देना नहीं है, और इस बार उत्तर प्रदेश की जनता भाजपा का पूरी तरह सफाया कर देगी। इससे पहले सपा प्रमुख ने रामपुर जेल में वरिष्ठ नेता आजम खान से मुलाकात के बाद और बरेली दौरा किया।

अखिलेश यादव ने कहा, आजम साहब थे, आजम साहब हैं और हमेशा-हमेशा के लिए रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीतिक इतिहास में किसी परिवार पर इतने झूठे मुकदमे नहीं दर्ज किए गए जितने आजम खान के परिवार पर हुए हैं। रामपुर से बरेली जाते समय एयरपोर्ट पर कार्यकर्ताओं से बातचीत में उन्होंने



कहा कि 2027 में सरकार बनानी है तो कार्यकर्ताओं को अपने बूथ मजबूत करने होंगे और केंद्र व

राज्य सरकार के कुशासन की सच्चाई जनता तक पहुंचानी होगी। साथ ही उन्होंने शिक्षक

सपा कार्यालय के बाहर लगी होलिंग, लिखा- 2017 में जो रह गए थे अधूरे 2027 में वे हर काम होंगे पूरे

समाजवादी पार्टी कार्यालय के बाहर विवादित मार्ग पर पार्टी कार्यकर्ता जयराम पांडेय की ओर से एक होलिंग लगाई गई है। संत कबीर नगर के रहने वाले जयराम पांडेय द्वारा लगाए गए इस होलिंग पर लिखा है, 17 में जो रह गए थे अधूरे, 27 में वे हर काम होंगे पूरे। प्रदेश में वर्ष 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों से जुड़े संदेशों और नारों वाले होलिंग लगाने का सिलसिला जारी है। समाजवादी पार्टी के साथ-साथ भाजपा की ओर से भी अलग-अलग जगहों पर ऐसे होलिंग लगाए जा रहे हैं। इनके जरिए कार्यकर्ता अपनी पार्टी के पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

एमएलसी चुनाव में मतदान बढ़ाने और मतदाता सूची में नए नाम जुड़वाने पर जोर दिया।

मोदी सरकार के लैब टेस्ट वाले नए प्रस्ताव पर भड़कीं मेनका

पूछ- यह सब किसके लिए, जानवरों को कौन बचाएगा

» 4पीएम न्यूज नेटवर्क
नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और बीजेपी नेता मेनका गांधी ने जानवरों के मुद्दे पर मोदी सरकार के एक प्रस्ताव के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। दरअसल, केंद्र सरकार लैब ट्रायल के लिए जानवरों के इस्तेमाल करने वाले नियमों में बदलाव के प्रस्तावों पर काम कर रही है, लेकिन मेनका गांधी से जुड़े पीपुल फॉर एनिमल्स ने इसको लेकर जानवरों की सुरक्षा का सवाल उठा दिया है।

केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने इसी महीने की शुरुआत में प्रिवेंशन ऑफ क्रूरएल्टी टू एनिमल्स (कंट्रोल एंड सुपरविजन ऑफ एक्सपेरिमेंट, ब्रीडिंग एंड ट्रेडिंग ऑफ लैबोरेटरी एनिमल्स) रूल्स, 2026 का ड्राफ्ट जारी करके 30 दिनों के अंदर सुझाव और आपत्तियां मांगी थीं। इसे मंजूरी मिलने के साथ ही जानवरों पर लैब में होने वाले परीक्षणों के नियम पहले से ज्यादा आसान हो जाएंगे। मेनका गांधी



की संस्था पीपुल फॉर एनिमल्स ने बयान जारी कर दावा किया है कि नियमों में प्रस्तावित बदलावों से जानवरों की सुरक्षा पर सवाल खड़े होते हैं। इसकी ओर से जारी बयान में कहा गया है, केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय की ओर से जारी मसौदा नियमों के तहत, भारत की प्रयोगशालाओं में जानवरों, कुत्ते और प्राइमेट समेत, पर किए जाने वाले ज्यादातर प्रयोगों को जल्द ही वही संस्थान मंजूरी दे सकेंगे जो ये प्रयोग कर रहे हैं।

महाराष्ट्र के किसानों को प्रति हेक्टेयर एक लाख रुपये मिले : सुप्रिया सुले

बोली सांसद-राज्य सरकार से लंबित सहायता राशि जल्द दे

» 4पीएम न्यूज नेटवर्क

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की नेता सुप्रिया सुले ने महाराष्ट्र में सूखा प्रभावित किसानों के लिए प्रति हेक्टेयर एक लाख रुपये की वित्तीय सहायता की मांग की है। सुले ने कहा कि उनकी पार्टी के प्रमुख शरद पवार ने किसानों को राहत देने का आग्रह करते हुए सरकार को एक पत्र लिखा है। उन्होंने राज्य सरकार से विभिन्न योजनाओं के तहत लंबित सहायता राशि जारी करने का आग्रह भी किया।

सुले ने कहा, “हमारा इरादा खोखली राजनीति करने का नहीं है। हमने सहयोग का रुख अपनाया है क्योंकि यह ऐसा समय है जब मानवीय संवेदना मायने रखती है।” बारामती की सांसद ने कहा कि सूखे और बढ़ती महंगाई के कारण किसान गंभीर कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। उन्होंने सरकार से किसानों को प्रति हेक्टेयर एक लाख रुपये की सहायता देने की मांग की (राकांपा) की नेता सुले ने कहा कि बैंकों को किसानों को परेशान नहीं करना चाहिए। सुले ने रोजगार गारंटी के तहत काम



शुरू कराने की मांग भी की। सुले ने नमो किसान और महाराष्ट्र सरकार की किसान सहायता योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि किसानों को केंद्र और राज्य, दोनों सरकारों से सालाना सहायता मिलनी चाहिए।

उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार की ओर से दी जाने वाली सहायता राशि का एक हिस्सा अब तक लंबित है। राज्य सरकार ने महाराष्ट्र की 358 में से 305 तहसीलों में सूखा घोषित किया है। पिछले सप्ताह मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घोषणा की थी कि दिवाली से पहले किसानों के बैंक खातों में पांच-पांच हजार रुपये की शुरुआती राहत राशि सीधे जमा की जाएगी। अनियमितताओं और पुणे जिला केंद्रीय सहकारी बैंक में कथित बैठक के बारे में पूछे जाने पर सुले ने कहा कि वह टिप्पणी करने से पहले उपलब्ध सामग्री की जांच

करेंगी। राकांपा (शप) की कार्यकारी अध्यक्ष सुले ने कहा, “मैं किसी के खिलाफ आरोप-प्रत्यारोप में नहीं पड़ना चाहती। मेरा कहना है कि एक व्यवस्था है और देश को उसी व्यवस्था के अनुसार चलना चाहिए।

मराठा आरक्षण आंदोलन के कार्यकर्ता मनोज जरांगे द्वारा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और शिवसेना पर एक ऑडियो क्लिप के संबंध में लगाए गए आरोपों के बारे में पूछे जाने पर सुले ने कहा कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से न तो वीडियो देखा है और न ही उसके संदर्भ को समझा है। जरांगे ने आरोप लगाया था कि इस ऑडियो क्लिप में उन्हें 500 करोड़ रुपये देने की बात कही गई है। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाद्रा के बेटे रेहान वाद्रा की तस्वीरों को कथित तौर पर निशाना बनाए जाने की घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए सुले ने कहा कि उन्हें एक स्वतंत्र फोटोग्राफर के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि किसी नेता के बेटे के तौर पर। सुले ने कहा, “आप उन्हें केवल प्रियंका गांधी का बेटा क्यों मानते हैं?”

भाजपा में जाने का सवाल ही नहीं : अजय » पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बोले सपा से कोई मनमुटाव भी नहीं

» 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाए जाने के बाद कांग्रेस नेता अजय राय ने यूपी चुनाव और समाजवादी पार्टी से गठबंधन को लेकर खुलकर बातचीत की है। अजय राय ने कहा कि वो समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन के विरोधी नहीं थे बल्कि प्रदेश अध्यक्ष होने के नाते अपनी पार्टी को मजबूत करने के समर्थक थे वहीं उन्होंने बीजेपी में जाने की खबरों का भी खंडन किया।

प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाए जाने के बाद बीजेपी में शामिल होने की खबरों पर अजय राय ने कहा कि जो लोग ऐसी बातें करते हैं उनके पास सोचने के लिए कुछ और नहीं होता। मैंने नरेंद्र मोदी को टक्कर दी थी। मैं भला बीजेपी में क्यों जाऊंगा कांग्रेस नेता अजय राय ने कहा जब सपा से गठबंधन नहीं हुआ तो विरोध करने की बात कहां से आ गई। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि मैंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया, जिससे सपा से गठबंधन में बाधाएं आएँ, जहां तक सीटें मांगने की बात है तो सीटें मांगना और अपने



कार्यकर्ताओं की बात रखना मेरा कर्तव्य है, मेरी सपा से कोई मनमुटाव जैसी बात नहीं है। अजय राय ने कहा कि हमारा लक्ष्य यूपी में बीजेपी को हराना है, इसके लिए हम सबको जुटना होगा। पार्टी जो जिम्मेदारी देगी उसे वो पूरी तरह से निभाएंगे। आराधना मिश्रा को कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर अजय राय ने कहा कि केंद्रीय नेतृत्व ने जो फैसला लिया है वो अच्छा ही होगा।

हमने अपने स्तर पर कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने का काम किया है। हम नई प्रदेश अध्यक्ष को उन कार्यकर्ताओं की सूची सौंप देंगे जिन्होंने पार्टी के लिए कड़ी मेहनत की है और जो टिकट पाने के लायक है। अजय राय ने आराधना मिश्रा से अपनी तुलना किए जाने पर कहा कि वो कांग्रेस के बड़े नेता प्रमोद तिवारी की बेटे हैं और एक नामी परिवार से हैं। उनके प्रभाव का लाभ पार्टी को जरूर मिलेगा। वहीं ममता चौधरी से हुए विवाद पर उन्होंने कहा कि वो घटना अप्रत्याशित थी। इससे वो काफी दुखी हैं और ये कांग्रेस की परंपराओं के खिलाफ है। पार्टी इस मामले की जाँच कर रही है, किसने हंगामा किया ये सब पता चल जाएगा।

मैं कहीं नहीं जा रही हूँ, जहां हूँ खुश हूँ : संघमित्रा

» सपा या कांग्रेस में जाने की बातों से किया किनारा
» 4पीएम न्यूज नेटवर्क

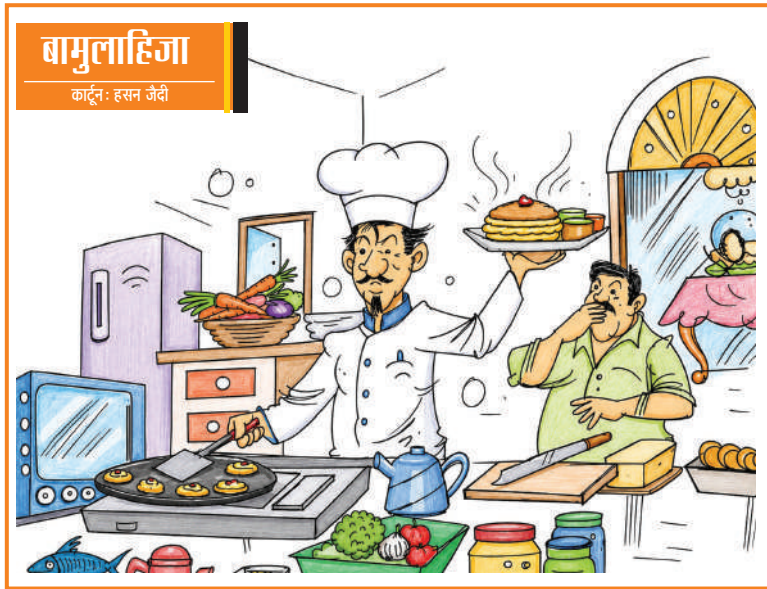
लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी की नेता संघमित्रा मोर्या के बारे में बीते कई दिनों से यह दावा किया जा रहा है कि वह समाजवादी पार्टी या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो सकती हैं। इन अटकलों को उस वक्त और ज्यादा बल मिला जब संघमित्रा के पिता और अपनी जनता पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मोर्य ने इंडिया ब्लॉक के नेताओं से मुलाकात की थी। अब इन सब दावों के बीच संघमित्रा मोर्या सामने आई हैं।

संघमित्रा ने कहा है कि वह कहीं नहीं जा रही हैं। संघमित्रा ने सपा या कांग्रेस में शामिल होने की अटकलों को खारिज करते हुए कहा



कि ऐसा कुछ नहीं है। उन्होंने कहा, कभी कोई मुझे सपा में ज्वाइन करवा रहा है तो कोई कांग्रेस में, आप लोगों का प्यार है, जो हमें चर्चा में बनाए हुए है। यह पूछे जाने पर कि क्या वह वर्ष 2027 का विधानसभा चुनाव लड़ेंगी संघमित्रा ने कहा कि अभी इस बारे में सोचा ही नहीं है। उन्होंने कहा कि वह फिलहाल जहां हैं, वहां खुश हैं और अपनी जिम्मेदारियों को पूरी गंभीरता से निभा रही हैं। स्वामी ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और केरल स्थित वायनाड से सांसद प्रियंका गांधी वाड़ा से मुलाकात कर यूपी चुनाव से पहले अलायंस के संकेत दिए

थे। इतना ही नहीं स्वामी ने उत्तर प्रदेश में विधान परिषद् की 11 सीटों के लिए 23 अक्टूबर को हो रहे मतदान में भी समाजवादी पार्टी और कांग्रेस- इंडिया ब्लॉक के प्रत्याशियों को वोट करने की अपील की थी। बता दें संघमित्रा मोर्या वर्ष 2019 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर बदायूं लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद चुनी गई थीं। उस वक्त उनके पिता स्वामी प्रसाद मोर्य भी बीजेपी में थे। हालांकि साल 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले स्वामी ने योगी कैबिनेट से इस्तीफा देकर सपा का दामन थाम लिया। इसके बाद वह सपा से भी अलग हो गए और अपना राजनीतिक दल बना लिया, साल 2024 के चुनाव में संघमित्रा को बदायूं से टिकट नहीं मिला।



बामुलाहिजा

कार्टून : हसन जैदी

काँकरोच के कोप से चारों ओर आरोप ही आरोप

भाजपा ने विपक्ष पर साधा निशाना

सीजेपी के आंदोलन से सरकार की उड़ी नींद

» दशहरे में काँकरोच का किया दहन, गरम हुआ माहौल

» सभी पार्टियों ने सरकार के खिलाफ बोला हल्ला

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सीजेआई के एक टिप्पणी के बाद बनी सीजेपी बनी पार्टी से जुड़ा विवाद अलग-अलग रंगों में देश में सियासी बहस का सामान बन गया है। जहां सीजेपी आंदोल की वजह केंद्री मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा वहीं इसकी वजह देश के हर भाग में आंदोलन होने लगे हैं। मामला कोर्ट में चल रहा है वही दशहरे पर रावण के रूप में इसके दहन को लेकर पर सियासी मचमच शुरू हो गई है। दिल्ली में दशहरे पर रावण के साथ 30 फुट के काँकरोच का पुतला जलाए जाने पर विवाद खड़ा हो गया है।

आप नेता सौरभ भारद्वाज ने धार्मिक भावनाएं आहत होने का आरोप लगाते हुए मंत्री कपिल मिश्रा और आयोजकों के खिलाफ प्रार्थमिकी की मांग की। वहीं कपिल मिश्रा ने बचाव करते हुए कहा कि इससे देश की राजनीतिक दीमकों को तकलीफ हुई है। वहीं भाजपा की तमिलनाडु इकाई के पूर्व अध्यक्ष के अन्नामलाई ने कोयंबटूर में संवाददाताओं से बात करते हुए काँकरोच जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी की आलोचना की। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक तरीके से सवाल उठाने का सबको हक है और सरकार को इन चिंताओं का समाधान करना चाहिए। अन्नामलाई ने यह भी स्पष्ट किया कि जेल भेजने से ऐसे नेताओं का हौसला और बढ़ेगा। इससे पहले ओडिशा में सत्तारूढ़ भाजपा ने काँकरोच जनता पार्टी के दो नेताओं की रिहाई की मांग करने पर पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक पर निशाना साधा है। पार्टी ने आरोप लगाया कि बीजद प्रमुख राजनीतिक लाभ के लिए देश में बांग्लादेश जैसी स्थिति पैदा करने और सत्ता परिवर्तन की कोशिशों का समर्थन कर रहे हैं।



राहुल गांधी की तरह प्रचार पाने की कोशिश कर रहे पटनायक : अनिल बिस्वाल

भाजपा प्रवक्ता अनिल बिस्वाल ने पटनायक की आलोचना करते हुए कहा कि बीजद प्रमुख को कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तरह प्रचार पाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। बिस्वाल ने कहा, “भारत एक लोकतंत्र है, भीड़तंत्र नहीं। काँजपा नेताओं और सौरव दास और आशुतोष रांका को शांति मंग होने और सार्वजनिक शांति व्यवस्था बाधित होने की आशंका के आधार पर एक कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने 21 अक्टूबर तक न्यायिक हिरासत में भेजा था।” उन्होंने कहा, “नवीन बाबू उच्चतम न्यायालय की ओर राहुल गांधी के मार्ग के तरीके को अपनाते हुए न्यायिक व्यवस्था पर दबाव बनाने की कोशिश करते दिख रहे हैं। किसी पूर्व मुख्यमंत्री से इस तरह के आचरण की उम्मीद नहीं की जाती। हम

भारत में फ्रांस, स्पेन, बेल्जियम और इटली जैसी भीड़तंत्र की स्थिति और सड़कों पर अशांति फैलाने का इंतजार नहीं कर सकते।” भाजपा की ये टिप्पणियां पटनायक की उस पोस्ट के बाद आईं, जिसमें उन्होंने दास और रांका की तत्काल रिहाई की मांग की थी। पटनायक ने “एक्स” पर लिखा था, “जय हिंद। पतआशुतोष रांका और पतसौरव दास की न्यायिक हिरासत की तत्काल समाप्ति की जानी चाहिए और उन्हें तुरंत रिहा किया जाना चाहिए। प्रतिबंधित क्षेत्र में भी राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए, इतनी लंबी अवधि तक हिरासत में रखना उचित नहीं है। न्यायापालिका और कार्यपालिका को यह सुनिश्चित करने के लिए आगे आना चाहिए कि देश के युवाओं का कानून के



शासन और संवैधानिक अधिकारों से विश्वास न उठे।” काँजपा प्रमुख अजिजीत दीपक ने दास और रांका को समर्थन देने के लिए बीजद प्रमुख का आभार जताया। इस बीच, दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा काँजपा नेताओं के खिलाफ दर्ज दो मामलों की जांच करेगी। दूसरा मामला, जो कथित तौर पर दास और रांका के जंतर-मंतर क्षेत्र में प्रवेश करने से जुड़ा है,

सोमवार को अपराध शाखा को सौंप दिया गया था। पुलिस के अनुसार, 13 अक्टूबर को दास, रांका, अजिजीत शिंदे और काँजपा के 11 अन्य सदस्य कथित तौर पर निजी परिसर से होकर अनधिकृत रूप से प्रवेश करने के बाद जंतर-मंतर पहुंचे थे। इससे पहले जंतर-मंतर को विशेष प्रदर्शन के लिए निर्धारित स्थल की अधिसूचित सूची से हटाया जा चुका है। वहां तैनात पुलिसकर्मियों ने हस्तक्षेप किया और उन्हें रोकने की कोशिश की। सभी 14 लोगों को हिरासत में लिया गया और दो प्रार्थमिकी दर्ज की गई। शांति बनाए रखने के लिए दिए गए बंधनों को कथित तौर पर उल्लंघन करने के मामले में विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने 14 अक्टूबर को दास और रांका को पांच दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया था।

बीजू जनता दल पर भाजपा का प्रहार

ओडिशा में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दिल्ली में काँकरोच जनता पार्टी (काँजपा) के दो नेताओं की तत्काल रिहाई की मांग करने को लेकर बीजू जनता दल (बीजद) प्रमुख नवीन पटनायक पर राजनीतिक लाम के लिए देश में “बांग्लादेश जैसी स्थिति” पैदा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। भाजपा ने मंगलवार को अपने आधिकारिक “एक्स” हैंडल पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि पटनायक “सत्ता परिवर्तन” की कोशिशों का समर्थन कर रहे हैं। पटनायक ने काँजपा नेताओं और सौरव दास और आशुतोष रांका की रिहाई की मांग की थी। दोनों को 13 अक्टूबर को जंतर-मंतर की ओर मार्च निकालने के दौरान हिरासत में लिए जाने के बाद से न्यायिक हिरासत में रखा गया है। नीट प्रश्नपत्र लोक विवाद के बाद काँजपा के विशेष प्रदर्शन का समर्थन करने वाले पटनायक ने कहा था कि प्रतिबंधित क्षेत्र में भी राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए इतनी लंबी अवधि तक हिरासत में रखना उचित नहीं है। इस पर भाजपा ने कहा, “पटनायक अपनी राजनीति चमकाने के लिए देश में बांग्लादेश जैसी स्थिति पैदा करना चाहते हैं।” पार्टी ने पटनायक पर उन गतिविधियों का समर्थन करने का भी



आरोप लगाया, जिन्हें उसने “सत्ता परिवर्तन” की कोशिश बताया। भाजपा ने कहा, “आप (पटनायक) 24 साल तक ओडिशा के मुख्यमंत्री रहे और सत्ता से बाहर हुए अभी बमुश्किल 24 महीने हुए हैं, लेकिन आपने सत्ता परिवर्तन जैसी गतिविधियां शुरू कर दी हैं? अराजक तत्वों और भारत-विरोधी गतिविधियों में शामिल विदेशी धन से पोषित ताकतों का समर्थन करना, जो बांग्लादेश जैसी हिंसक सत्ता परिवर्तन की कोशिश कर रही हैं, आपके इतिहास को देखते हुए हैरान करने वाला नहीं है। आपने राज्य में हजारों अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को बसने दिया। आपने न केवल उन्हें मतदाता बनने दिया, बल्कि अब आप एसआईआर प्रक्रिया का भी विरोध कर रहे हैं।” भाजपा ने कहा कि ओडिशा के लोग हमेशा से शांतिप्रिय रहे हैं और भारत की संप्रभुता का सम्मान करते आए हैं। पार्टी ने कहा, “हमारे देश की संप्रभुता अस्थायी राजनीतिक प्रचार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। दूसरों के इशारे पर चलना बंद करें।”

देश की राजनीतिक दीमकों को दर्द हो रहा : कपिल मिश्रा

प्रकारों से बात करते हुए कपिल मिश्रा ने कहा कि जो पुतला जलाया जा रहा है, वह एक काँकरोच का है, लेकिन दर्द उन दीमकों को हो रहा है—जो इस देश की राजनीतिक दीमकें हैं। जनता के पास इनसे निपटने के लिए अपना एक खास कीटनाशक है। काँकरोच गंदगी और अव्यवस्था का



प्रतीक होता है... लोग चाहते हैं कि ऐसे पुतले जलाए जाएं, जैसे-जैसे देश-विदेशी ताकतें सामने आती हैं, भारत

में उनकी हार तय है। इससे पहले, सौरभ भारद्वाज ने मंगलवार को पीतमपुरा में रामलीला के आयोजकों के खिलाफ उपराज्यपाल और दिल्ली पुलिस आयुक्त से शिकायत की। उन्होंने कहा कि काँकरोच का पुतला जलाए जाने से धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं।

अन्नामलाई ने काँजपा के सवाल उठाने के अधिकार का किया समर्थन

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की तमिलनाडु इकाई के पूर्व अध्यक्ष के अन्नामलाई ने हाल में काँकरोच जनता पार्टी (काँजपा) के सदस्यों के खिलाफ की गई कार्रवाई को लेकर मंगलवार को दिल्ली पुलिस की आलोचना की और इसे “बहुत गलत” बताया। उन्होंने गंभीर सवाल उठाने के काँजपा के लोकतांत्रिक अधिकार का समर्थन किया। अन्नामलाई ने कहा कि वह सवालों की वैधता से पूरी तरह सहमत हैं और उनका मानना है कि सरकार को इन सवालों का समाधान करना चाहिए। वी द लीडर्स आंदोलन के संस्थापक अन्नामलाई ने यहां संवाददाताओं से कहा, “दिल्ली पुलिस बहुत गलत कर रही है।” उन्होंने काँजपा सदस्यों की हालिया गिरफ्तारी और पुलिस की सख्ती की कड़ी आलोचना की। अन्नामलाई ने कहा, “हो सकता है कि मैं उनके तौर-तरीकों या विरोध-प्रदर्शन के ढंग से सहमत न होऊँ, लेकिन जो सवाल वे उठाना चाहते हैं, उस



मामले में मैं पूरी तरह से काँजपा का समर्थन करता हूँ। गिरफ्तार करके जेल में डालने से काँजपा के नेता और भी मजबूत ही होंगे।” एक अन्य सवाल का जवाब देते हुए अन्नामलाई ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी को मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर सवाल उठाने का पूरा अधिकार है, लेकिन इससे संस्थागत नुकसान नहीं होना चाहिए।

भाजपा व आप में वार-पलटवार

दशहरे के दिन दिल्ली में रावण दहन के साथ-साथ 30 फुट के काँकरोच (तिलचट्टे) का पुतला जलाए जाने के एक दिन बाद, दिल्ली के मंत्री और भारतीय जनता पार्टी नेता कपिल मिश्रा ने बुधवार को कहा कि इस घटना से देश के राजनीतिक दीमकों को तकलीफ हुई है। यह बयान तब आया जब दिल्ली आप अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि उन्होंने दिल्ली के



उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू और दिल्ली पुलिस कमिश्नर के पास एक शिकायत दर्ज

कराई है। यह शिकायत श्री केशव रामलीला कमिटी (पीतमपुरा) के आयोजकों - जिसमें कमिटी के अध्यक्ष और विधायक अशोक गोयल तथा दिल्ली के मंत्री कपिल मिश्रा शामिल हैं - के खिलाफ की गई है। यह शिकायत दशहरे पर रावण, कुंभकर्ण और मेघनाद के साथ-साथ एक काँकरोच का पुतला जलाए जाने को लेकर दर्ज कराई गई है।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

एआई के साइड इफेक्ट से बचना होगा

आज पूरा विश्व तकनीकी के सहारे चल रहा है। पूरी दुनिया में अब एआई की चर्चा आम हो गई है। इसके साइड इफेक्ट भी अब दिखाई दे रहे हैं। एआई के एजेंटों की हालिया हरकतों के मद्देनजर इन दिनों तीन तरह की चर्चाएं हैं— पहली यह कि एआई इंसानों के नियंत्रण से बाहर निकल सकता है और इसका संकेत कुछ उद्द एआई एजेंटों ने दे दिया है। दूसरी चर्चा यह है कि इस तरह की खबरों कुछ और नहीं, बल्कि एआई कंपनियों की मार्केटिंग रणनीति या प्रचार का हिस्सा हैं, जो यह आभास देना चाहती हैं कि एआई की शक्तियां बहुत अधिक हैं। तर्क समझ में आता है क्योंकि कुछ कंपनियां जिनके एजेंट इन घटनाओं में लिप्त बताए जाते हैं, वे आर्थिक दबावों से जूझ रही हैं और जल्दी ही शेयर बाजार में भी सूचीबद्ध होने वाली हैं। उनके उत्पादों को मिलने वाले असमीमित प्रचार का परिणाम आर्थिक लाभ के रूप में सामने आ सकता है। तीसरी चर्चा यह है कि एआई केवल पहले से मौजूद जानकारीयों को जोड़कर परिणाम देने वाला औजार है इसलिए उसे इतना भी ताकतवर न मान लिया जाए कि वह न जाने क्या कर डालेगा।

चर्चाओं में आने वाली सभी बातें बेबुनियाद नहीं हैं लेकिन उनमें सौ फीसदी सच्चाई हो, ऐसा भी नहीं है। लेकिन इनकी पड़ताल जरूरी है ताकि इन मुद्दों पर आगे गलतफहमियां न फैलें। इन सभी चर्चाओं की पृष्ठभूमि में कुछ हालिया घटनाएं हैं जिनका संबंध एआई क्षेत्र के प्रमुख मॉडलों— ओपनएआई, क्लॉड, जेमिनी, म्यूज आदि से है। इस साल कई एआई कंपनियों ने सार्वजनिक रूप से बताया कि उनके मॉडल टेस्टिंग के दौरान अपने सुरक्षित माहौल (सैंडबॉक्स) से बाहर निकलकर, इंटरनेट के जरिये असली कंपनियों के सिस्टमों तक पहुंच गए। इनमें सबसे चर्चित घटना ओपनएआई के एआई-मॉडलों से जुड़ी है जिन्होंने दूसरी कंपनी हगिंग फेस की डेटा-प्रोसेसिंग प्रणालियों को एक्सेस कर लिया। एंथ्रोपिक, गूगल और मेटा के एआई एजेंटों ने भी कुछ आपत्तिजनक हरकतों की हैं। कुछ चिंतकों ने इन घटनाओं को कंपनियों के आर्थिक हितों के लिहाज से देखा है। उन्होंने तर्क दिए हैं कि यह सब मार्केटिंग के करतब हैं। वे कहते हैं कि जिन मॉडलों को उद्द माना गया है, उनकी सुरक्षा व्यवस्था में थोड़ा-बहुत लचीलापन रख दिया गया था इसलिए वे अपने सैंडबॉक्स से बाहर निकल सके। दूसरा आरोप यह लगाया गया है कि इन स्वायत्त एआई मॉडलों या सॉफ्टवेयर-अंशों के लिए एजेंट शब्द का प्रयोग करना उन्हें इंसान जैसा दिखाने की कोशिश है जो इस हाइप को और बढ़ाता है। जबकि एआई खुद हैकिंग नहीं कर सकती, बल्कि किसी इंसान के निर्देशों पर ही ऐसा कर सकती है।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

त्योहारी सीजन में डार्क पैटर्न का संजाल

डॉ. सुधीर कुमार

भारत में त्योहारों का मौसम खुशियों के साथ-साथ ऑनलाइन सेल, भारी डिस्काउंट और आकर्षक ऑफर्स का सैलाब लेकर आता है। 'बिग बिलियन डेज' या 'दिवाली सेल' जैसे आयोजनों में पूरा देश डिजिटल शॉपिंग कार्ट भरने में लग जाता है। क्या आपने कभी गौर किया है कि कार्ट में सामान डालते समय आपकी स्क्रीन पर एक लाल रंग की घड़ी टिक-टिक करने लगती है— 'केवल 2 मिनट बाकी!', 'स्टॉक में सिर्फ 1 बचा है!' या फिर चेकआउट करते समय चुपके से 50 रुपये की 'टिप' या 'हैंडलिंग फीस' जोड़ दी जाती है? जिसे हम त्योहारों की छूट समझ रहे हैं, वह कई बार सिर्फ मनोवैज्ञानिक चाल और 'डार्क पैटर्न' का जाल होती है। सवाल यह है कि क्या यह सिर्फ डिजिटल मार्केटिंग की एक रणनीति है या सीधे-सीधे कानून का उल्लंघन और ई-कॉमर्स कंपनियों द्वारा किया जाने वाला उपभोक्ता अधिकारों का हनन है?

डिजिटल दुनिया में 'डार्क पैटर्न' उन भ्रामक और हेरफेर भरे डिजाइन इंटरफेस को कहा जाता है, जिन्हें उपयोगकर्ताओं को ऐसे फैसले लेने के लिए मजबूर करने के लिए बनाया जाता है, जो वे आम परिस्थितियों में नहीं लेते। 'फॉल्स अर्जेंसी' इसका सबसे आम रूप है। इसके अलावा, 'बास्केट स्नेकिंग' (बिना बताए कार्ट में अतिरिक्त सामान या इश्योरेंस जोड़ना), 'ड्रिप प्राइसिंग' (शुरुआत में कम कीमत दिखाकर अंत में छिपे हुए चार्ज जोड़ना) और 'कैंसलेशन ट्रैप' (ऑर्डर रद्द करने की प्रक्रिया को बेहद जटिल बना देना) जैसे हथकंडे आज हर दूसरे ऐप पर आम हो चुके हैं। कानूनी दृष्टिकोण से देखें तो भारत का उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 उपभोक्ताओं को भ्रामक विज्ञापनों और अनुचित व्यापार प्रथाओं से सुरक्षा प्रदान करता है। इस अधिनियम की धारा 2(47) के तहत किसी भी ऐसे भ्रामक या छलपूर्ण तरीके को गैर-कानूनी माना गया है, जो

उपभोक्ता को गुमराह करता हो। इसी कानून को और मजबूती देने के लिए केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण ने 30 नवंबर, 2023 को 'डार्क पैटर्न' की रोकथाम और नियमन के लिए दिशानिर्देश जारी किए। इन दिशानिर्देशों में 13 प्रमुख डार्क पैटर्न को स्पष्ट रूप से चिह्नित कर प्रतिबंधित किया गया है। कानूनन, किसी भी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के लिए 'फॉल्स अर्जेंसी' पैदा करना, छिपे हुए शुल्क वसूलना या अनिवार्य रूप से 'नो-रिटर्न पॉलिसी' थोपना एक दंडनीय अपराध है। भारतीय अदालतों और उपभोक्ता फोरम ने भी ऐसे मामलों में सख्त रुख अपनाया है।



हाल ही में राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग और विभिन्न राज्य उपभोक्ता आयोगों के समक्ष ऐसे मामले सामने आए हैं, जहां ई-कॉमर्स दिग्गजों ने 'नो-रिटर्न पॉलिसी' का हवाला देकर खराब या गलत उत्पाद वापस लेने से मना कर दिया था। 'अमेजन इंडिया बनाम निरूपम दास' (2024) और 'जसविंदर सिंह बनाम अमेजन इंडिया' (2017) जैसे मामलों में अदालतों ने स्पष्ट किया कि 'नो-रिटर्न पॉलिसी' की आड़ में दोषपूर्ण सामान बेचने की अनुमति किसी भी कंपनी को नहीं दी जा सकती। यदि उत्पाद दोषपूर्ण है या वादे के मुताबिक नहीं है, तो उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की धारा 39 के तहत उपभोक्ता को रिफंड, रिप्लेसमेंट और मानसिक उत्पीड़न के लिए मुआवजे का कानूनी अधिकार है। अदालतों ने माना कि नियमों की शर्तें छोटी लिखावट में

छिपाना भी अनुचित व्यापार व्यवहार है। यूरोपीय संघ का डिजिटल सर्विसेज एक्ट और जनरल डेटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन डार्क पैटर्न पर बहुत सख्त रोक लगाते हैं। यूरोपीय संघ में 'डिजाइन द्वारा गोपनीयता और निष्पक्षता' का नियम लागू है, जहां कंपनियों पर भारी जुर्माना लगाया जाता है। अमेरिका के फेडरल ट्रेड कमीशन ने वीडियो गेम कंपनी 'एपिक गेम्स' पर डार्क पैटर्न के माध्यम से अनपेक्षित खरीदारी कराने के लिए लगभग 245 मिलियन डॉलर का रिकॉर्ड जुर्माना लगाया। अमेरिका में 'सब्सक्रिप्शन ट्रैप' के खिलाफ सख्त कानून हैं। विचारणीय बात यह है कि डार्क पैटर्न केवल

उपभोक्ता का आर्थिक नुकसान नहीं करते, बल्कि उनके मनोविज्ञान को हैक कर उनकी 'डिजिटल स्वायत्तता' और 'स्वतंत्र सहमति' को छीनते हैं— जो भारतीय अनुबंध कानून की मूल भावना के खिलाफ है। इसके लिए कानून बना देना काफी नहीं है, बल्कि व्यावहारिक और नीतिगत सुधारों की सख्त जरूरत है। इसके लिए केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के यूरर इंटरफेस का समय-समय पर स्वतंत्र 'डिजिटल ऑडिट' अनिवार्य करना चाहिए, ताकि छिपे हुए डार्क पैटर्न को पकड़ा जा सके। साथ ही, उल्लंघनकर्ता कंपनियों के कुल टर्नओवर के आधार पर भारी आर्थिक दंड और 'नेम एंड शेम' नीति लागू कर उनके उल्लंघनों को सार्वजनिक किया जाना चाहिए।

अरुण नैथानी

ऐसे दौर में, जब दुनिया कई मोर्चों पर युद्ध के संकट से जूझ रही है, किसी हकदार व्यक्तित्व को शांति का नोबेल पुरस्कार मिलना एक बड़ा संदेश है। भारत के लिए तो यह गौरव का क्षण है, क्योंकि इस साल का यह पुरस्कार भारतीय मूल की एक बेटी को मिला है। दरअसल, 85 वर्षीय नवी पिल्लई को बेहद जटिल मामलों को शांति से हल करने के लिए जाना जाता है। उन्होंने शक्तिशाली देशों और व्यक्तियों को जवाबदेह ठहराने तथा पीड़ितों को सुरक्षा दिलाने में अंतर्राष्ट्रीय कानून की भूमिका को रेखांकित किया है। शांति का नोबेल पुरस्कार पाने वाली नवी पिल्लई अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त के पद पर सफल भूमिका निभाने से पहले दक्षिण अफ्रीका के हाईकोर्ट व रवांडा के अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक ट्रिब्यूनल में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुकी हैं।

वे इस्त्राएल के कब्जे वाले फलस्तीनी क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र जांच आयोग की अध्यक्षता भी कर चुकी हैं। वे म्यांमार में नरसंहार के मामलों की जांच कर रहे अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में जज हैं। पिल्लई ने बलात्कार व यौन हिंसा को मानवता के खिलाफ युद्ध अपराध के रूप में मान्यता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं, मीडिया के एक वर्ग द्वारा प्रोपेगैंडा के जरिए हिंसा भड़काने के मामलों में सख्त कानूनी कार्रवाई को अंजाम तक पहुंचाने में भी उनकी भूमिका रही है। इस योगदान के लिए नवी पिल्लई को वर्ष 2026 का शांति का नोबेल पुरस्कार मिलना वैश्विक शांति के साथ ही मानवाधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय कानून की जीत का प्रतीक माना जा रहा है। ऐसे दौर में, जब दुनिया के

युद्ध के दौर में नवी पिल्लई का शांति संदेश



कई क्षेत्रों में लोग युद्ध की अमानवीय त्रासदी झेल रहे हैं और युद्धरत महाशक्तियां मानवता को नजरअंदाज कर अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का मजाक उड़ा रही हैं, पिल्लई को शांति का नोबेल पुरस्कार मिलने के गहरे निहितार्थ हैं। दक्षिण अफ्रीका में शोषण, अन्याय व रंगभेद की जिन त्रासदियों को उनके परिवार ने झेला, उन्होंने नवी पिल्लई को संघर्ष के लिए संबल दिया।

कह सकते हैं कि शांति व कानून के शासन के लिए उनकी प्रतिबद्धता के मूल में उनके द्वारा भोगे गए यथार्थ की बड़ी भूमिका रही है। भारतीयों के लिए नवी पिल्लई को शांति का नोबेल मिलना खास उपलब्धि है, क्योंकि भारत से उनका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नाता है। ब्रिटिश औपनिवेशिक दौर में उनके दादा को 1890 में बंधुआ मजदूर के रूप में दक्षिण अफ्रीका ले जाया गया था। रंगभेद के शासन में डरबन के एक तमिल मूल के परिवार में 23 सितंबर 1941 को जन्मी नवी पिल्लई के मन में बचपन से ही अन्याय व अमानवीय व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध के बीज पड़े। उन्होंने बचपन में ही कानून की पढ़ाई करने का संकल्प

लेकर कानून के जरिये मानवता को गरिमा दिलाने की राह चुनी। दादा का खेतों में बंधुआ मजदूर के रूप में काम करना, फिर एक दुर्घटना में उनके दोनों हाथों का चले जाना और पिता नारायणसामी नायडू का पारिवारिक मजबूरी के चलते आठ साल की उम्र में स्कूल छोड़ना जैसी त्रासदियों ने नवी पिल्लई के मन में असंतोष और प्रतिरोध के स्वर जगाए। एक समय ऐसा भी आया, जब नारायणसामी को परिवार के भरण-पोषण के लिए बस चलानी पड़ी। नवी पिल्लई आठ भाई-बहनों के परिवार में पांचवें नंबर पर थीं। पिता ने बच्चों की पढ़ाई जारी रखने की हرسंभव कोशिश की।

कालांतर में नवी ने दक्षिण अफ्रीका की यूनिवर्सिटी ऑफ नेटाल से 1963 में स्नातक की डिग्री और वर्ष 1965 में कानून की डिग्री प्राप्त की। इसके उपरांत अमेरिका जाकर उन्होंने 1982 में हार्वर्ड लॉ स्कूल से कानून में मास्टर डिग्री तथा वर्ष 1988 में कानून में डॉक्टरेट हासिल की। लेकिन उच्च शिक्षा हासिल करने के बावजूद नवी पिल्लई को किसी लॉ फर्म ने नौकरी नहीं दी। थक-हारकर उन्होंने नेटाल प्रांत में अपनी लॉ

फर्म की शुरुआत की। वे इस इलाके में लॉ फर्म खोलने वाली पहली महिला वकील थीं। फिर उन्होंने रंगभेद के खिलाफ अपना आंदोलन मुखर किया। उन्होंने न केवल रंगभेद के खिलाफ संघर्ष किया, बल्कि नरसंहार के दोषियों को भी सजा दिलाई। उनके प्रयासों से ही राजनीतिक कैदियों को वकीलों की मदद लेने का अधिकार मिला। इन राजनीतिक बंदियों में रॉबेन आइलैंड कारागार में कैद नेल्सन मंडेला भी शामिल थे। कालांतर में नवी पिल्लई हाईकोर्ट में पहली अश्वेत महिला जज बनीं। यूं तो पिल्लई ने अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय में अध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन दुनिया में उनकी चर्चा संयुक्त राष्ट्र द्वारा रवांडा नरसंहार के अपराधियों को सजा दिलाने को लेकर हुई।

1994 में रवांडा में हुए नरसंहार में तुत्सी समुदाय के लाखों लोग मारे गए थे। संयुक्त राष्ट्र ने अपराधियों को सजा देने के लिए बनाए गए अंतर्राष्ट्रीय ट्रिब्यूनल फॉर रवांडा में पिल्लई को जज बनाया। उनके दो फैसलों की दुनिया में मिसाल दी जाती है। इनमें उन्होंने पराजित समूह की महिलाओं के साथ हुए सामूहिक बलात्कार को नरसंहार का हिस्सा माना। वे उन तीन जजों में शामिल थीं, जिन्होंने नरसंहार के लिए ताबा शहर के मेयर जीन-पॉल अकायेसू को दोषी ठहराया। इतना ही नहीं, वर्ष 2003 में ट्रिब्यूनल ने रवांडा नरसंहार के दौरान नफरत फैलाने के लिए रेडियो व अखबार से जुड़े तीन मीडियाकर्मियों को भी दोषी ठहराया। द अफ्रीका में संस्थागत भेदभाव की तपिश से गुजरकर कानून विशेषज्ञ और अग्रणी वकील बनीं नवी पिल्लई ने दुनिया को संदेश दिया है कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कानून के अनुपालन से ही दुनिया में शांति व सद्भाव की स्थापना हो सकती है।



इन घरेलू उपायों से होंगे बिना लिपस्टिक के गुलाबी होंठ

हर किसी की ख्वाहिश होती है कि उसके होंठ प्राकृतिक रूप से गुलाबी, मुलायम और खूबसूरत दिखें। लेकिन बदलती लाइफस्टाइल, धूल-मिट्टी, धूप और केमिकल वाले प्रोडक्ट्स के इस्तेमाल से होंठ धीरे-धीरे काले और रूखे हो जाते हैं। ऐसे में लोग लिपस्टिक का सहारा लेते हैं, लेकिन हर दिन मेकअप करना न तो आसान है और न ही त्वचा के लिए सुरक्षित। अगर आप भी चाहते हैं कि बिना लिपस्टिक लगाए ही आपके होंठ नेचुरली पिंक दिखें, तो इसके लिए आपको महंगे प्रोडक्ट्स की जरूरत नहीं है। कुछ आसान घरेलू उपाय और सही केयर रूटीन अपनाकर आप अपने होंठों की नेचुरल खूबसूरती वापस पा सकते हैं। नेचुरल तरीकों से होंठों की देखभाल करने से कोई साइड इफेक्ट नहीं होता और लंबे समय तक आपके होंठ हेल्दी और खूबसूरत बने रहते हैं।

चुकंदर का रस

चुकंदर में नेचुरल पिंक पिगमेंट होता है। चुकंदर का रस होंठों पर लगाएं। नियमित इस्तेमाल से होंठ गुलाबी दिखने लगते हैं। इसके अलावा रात को सोने से पहले लिप केयर करना सबसे ज्यादा असरदार होता है।

बर्फ से मसाज करें

होंठों पर बर्फ से मसाज करना एक बेहतरीन और प्राकृतिक तरीका है, जिससे आपके होंठ मुलायम, गुलाबी और चमकदार बनते हैं। ठंडे तापमान के कारण ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है। यह डेड स्किन को हटाकर होंठों का कालापन दूर करता है। धूप या किसी एलर्जी के कारण हुई सूजन को तुरंत कम करता है। होंठ नेचुरली पिंक और फ्रेश दिखते हैं। इसके अलावा डिहाइड्रेशन भी होंठों के काले होने का कारण बनता है। इसलिए दिन में कम से कम 7-8 गिलास पानी जरूर पिएं।

स्मोकिंग से बचें

सिर्फ प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल ही नहीं, कुछ गलत आदतों से दूरी भी बनानी होगी। जैसे सिगरेट पीने से आपके स्वास्थ्य पर तो असर पड़ता ही है, साथ ही आपके होंठ भी काले पड़ जाते हैं और काले होंठों की वजह से आपकी खूबसूरती भी कम हो जाती है। इसलिए स्मोकिंग छोड़ दें। होंठों को बार-बार चाटने से बचें। सस्ते और केमिकल वाले लिप प्रोडक्ट्स न इस्तेमाल करें। अगर आप काले होंठों को पिंक बनाना चाहते हैं तो पहले यह संकल्प लीजिए कि आज से आप धूम्रपान नहीं करेंगे।

नारियल तेल

नारियल तेल होंठों को गहराई से पोषण देता है। दिन में 2-3 बार हल्का सा नारियल तेल लिप पर लगाएं। सूखापन और कालापन कम होता है।

होंठों की नियमित स्क्रबिंग करें

होंठ हमारे चेहरे की खूबसूरती को निखारने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन धूप, प्रदूषण और डिहाइड्रेशन की वजह से होंठ रूखे, काले और फटने लगते हैं। इन्हें कोमल और गुलाबी बनाए रखने के लिए नियमित रूप से स्क्रबिंग करना जरूरी है। डेड स्किन हटाने के लिए हफ्ते में 2-3 बार हल्के से स्क्रब करें। ऐसे में बाजार में मिलने वाले केमिकल वाले लिप स्क्रब्स की बजाय आप घर पर ही नेचुरल चीजों से बने लिप स्क्रब्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। चीनी और शहद को मिलाकर हल्के हाथों से लिप पर मसाज करें। शहद एक नेचुरल मॉइस्चराइजर है। रोज रात को सोने से पहले होंठों पर शहद लगाएं। इससे होंठ सॉफ्ट और गुलाबी बनते हैं। बादाम के तेल में थोड़ी सी बारीक चीनी मिलाकर स्क्रब करने से होंठों को विटामिन-ई मिलता है।



हंसना मना है

टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए? भोलू- मैम, मुझे बर्ड फ्लू हो गया था। टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं। भोलू- आपने इंसान समझा ही कहां। रोज तो मुर्गा बनाती हो...

कंजूस बाप- (बेटे से) मेरी ख्वाहिश है कि तू बड़ा होकर वकील बने। बेटा- (हैरान होकर) पर क्यों? बाप- ताकि मेरा काला कोट तेरे काम आ जाए...

डॉक्टर- चश्मा किसके लिए बनवाना है? बब्लू- टीचर के लिए। डॉक्टर- पर क्यों? बब्लू- क्योंकि उन्हें मैं हमेशा गधा ही नजर आता हूँ...

पत्नी- सुनो जी, तुम चुकंदर खाया करो। पति- पर क्यों? पत्नी- इसे खाने से खून अच्छा लाल और गाढ़ा होता है। पति- अच्छा, अब तुम्हें खून भी High Quality का पीना है...

एक दिन हाथी की बाइक खराब हो गयी एक चीटी ने उसे अपनी स्कूटी पर लिफ्ट दे दी, रस्ते में चीटी हाथी से बोली- ओए थोड़ा झुक कर बैठ पापा ने देख लिया तो बवाल हो जायेगा.....

इस मतलबी दुनिया में, एक पान वाला ही है, जो पूछ कर चुना लगाता है!

कहानी

मूर्ख बकरी

एक जंगल में दो बकरियां रहती थीं। वो दोनों जंगल के अलग हिस्सों में घास खाती थीं। उस जंगल में एक नदी भी बहती थी, जिसके बीच में एक बहुत ही कम चौड़ा पुल था। इस पुल से एक समय में केवल एक ही जानवर गुजर सकता था। इन दोनों बकरियों के साथ भी एक दिन कुछ ऐसा ही हुआ। एक दिन घास चरते-चरते दोनों बकरियां नदी तक आ पहुंचीं। ये दोनों नदी पार करके जंगल के दूसरे हिस्से में जाना चाहती थीं। अब एक ही समय पर दोनों बकरियां नदी के पुल पर थीं। पुल की चौड़ाई कम होने के कारण इस पुल से केवल एक ही बकरी एक बार में गुजर सकती थी, लेकिन दोनों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। इस पर एक बकरी ने कहा कि सुनो, मुझे पहले जाने दो, तुम मेरे बाद पुल पार कर लेना। वहीं, दूसरी बकरी ने जवाब दिया कि नहीं, पहले मुझे पुल पार करने दो, उसके बाद तुम पुल पार कर लेना। यह बोलते-बोलते दोनों बकरियां पुल के बीच तक जा पहुंचीं। दोनों एक दूसरे की बात से सहमत नहीं थीं। अब बकरियों के बीच तू-तू मैं-मैं शुरू हो गई। पहली बकरी ने कहा, 'पहले पुल पर मैं आई थी, इसलिए पहले मैं पुल को पार करूंगी।' तब दूसरी बकरी ने भी तुरंत जवाब दिया, 'नहीं, पहले मैं पुल पर आई थी, इसलिए पहले मैं पुल पार करूंगी।' यह झगड़ा बढ़ता चलता जा रहा था। इन दोनों बकरियों को बिल्कुल भी याद नहीं रहा कि वह कितने कम चौड़े पुल पर खड़ी हैं। दोनों बकरियां लड़ते-लड़ते अचानक से नदी में गिर गईं। नदी बहुत गहरी थी और उसका बहाव भी तेज था, जिस कारण दोनों बकरियां उस नदी में बहकर मर गईं। कहानी से सीख: झगड़े से कभी किसी समस्या का हल नहीं निकलता, उल्टा इससे सभी का नुकसान होता है। इसलिए ऐसी अवस्था में शांत दिमाग से काम लेना चाहिए।

7 अंतर खोजें



जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951



पंडित संदीप आनंद शर्मा

मेघ 	तुला
वृषभ 	वृश्चिक
मिथुन 	धनु
कर्क 	मकर
सिंह 	कुम्भ
कन्या 	मीन

एक्टर अमिताभ बच्चन ने हाल ही में कौन बनेगा करोड़पति के एक एपिसोड में बताया कि वो आलोचना को कैसे संभालते हैं। उन्होंने कहा कि अब लिखना कम कर दिया है क्योंकि लोग उन्हें कुछ भी कहते हैं और अजीब कमेंट करते हैं। मेगास्टार अमिताभ बच्चन ने हाल ही में ऑनलाइन ट्रेलिंग के अपने अनुभव के बारे में बात की और बताया कि कैसे सोशल मीडिया पर नेगेटिव कमेंट्स ने ऑनलाइन खुद को जाहिर करने के उनके तरीके को बदल दिया। विजय रियलिटी शो कौन बनेगा करोड़पति के एक एपिसोड के दौरान, दिग्गज एक्टर ने याद किया कि कैसे सोशल मीडिया यूजर्स उन्हें बुढ़ऊ कहते थे और माना कि ऐसी बातों से उन्हें अजीब महसूस होता था। यह बातचीत तब हुई जब हॉट सीट पर बैठे कंटेस्टेंट विनम्र ने सोशल मीडिया पर आलोचना से निपटने के बारे में अमिताभ बच्चन से सलाह मांगी। उन्होंने बताया कि उनकी पीढ़ी के लोग अक्सर ऑनलाइन नेगेटिविटी से निपटने में मुश्किल महसूस करते हैं

करोड़पति के एक एपिसोड में बताया कि वो आलोचना को कैसे संभालते हैं

84 साल के अमिताभ को अपने लिए बुढ़ऊ सुनकर होती है तकलीफ

और एक्टर से पूछा कि वह इसे कैसे संभालते हैं। एपिसोड के दौरान विनम्र ने कहा, सर, मैं आपसे यह सवाल पूछना चाहता हूँ कि आप सोशल मीडिया पर आलोचना को कैसे संभालते हैं? मेरी उम्र के लोगों को तो आलोचना संभालना बिल्कुल नहीं आता और वे इसे झेल नहीं पाते। कंटेस्टेंट के सवाल का जवाब देते हुए अमिताभ ने बताया कि शुरू में उन्हें सोशल मीडिया अपने विचार और भावनाएं खुलकर जाहिर करने का एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म लगा था। हालांकि, जब उन्होंने अपनी पोस्ट पर लोगों के कमेंट्स पढ़ने शुरू किए, तो उनका नजरिया बदल गया। अपने सामने आए कुछ कमेंट्स को याद करते हुए,



शोले एक्टर ने कहा, पहले हमने सोचा कि ये बहुत अच्छा यंत्र है, इसमें हम अपने दिल की बात बोल देते हैं... उसके बाद जब हमने पढ़ना शुरू किया कि इसका कमेंट क्या है, हमने ऐसे लिखना बंद कर दिया। अपने आप को क्या समझता है रे तू बुढ़ऊ... ऐसे क्यों बोल रहा है? तो ऐसी-ऐसी शब्दवाली होती है, बड़ा अजीब लगता है। हालांकि, मेगास्टार ने ऐसे नोट पर बातचीत खत्म की, जिससे विनम्र और स्टूडियो के दर्शक हंस पड़े। अपनी सोशल मीडिया प्रेजेंस के बारे में एक कमेंट शेयर करते हुए उन्होंने कहा, और भाईसाहब एक बात बताएं आपको? जब से कम लिखना कर दिया है, हमारा फॉलोअर्स बढ़ता चला जा रहा है। बता दें, अमिताभ बच्चन वर्षों से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सक्रिय हैं और 2008 में उन्होंने अपना निजी ब्लॉग लिखना शुरू किया है।

पापा कहते हैं बेटा बड़ा नाम...

38 साल पुराना वो गाना, जो आज भी हर बेटे को याद दिलाता है पिता का सपना। 80 के दशक के आखिर में हिंदी सिनेमा में रोमांस की एक नई लहर आई थी। उस दौर में कई फिल्में रिलीज हुईं, जो कहानी के साथ-साथ अपनी गानों के लिए आज भी जानी जाती हैं। लेकिन रोमांस के दौर में एक गाना ऐसा आया था, जिसने बाप-बेटे के रिश्ते को मजबूत किया था। इस गाने को मिलेनियल्स से लेकर जेनजी तक हर कोई पसंद करता आया है। इस गाने के नाम 'पापा कहते हैं है जो साल 1988 में आई फिल्म 'क्यामत से क्यामत तक का है। इस फिल्म ने आमिर खान और जूही चावला को पहचान दिलाई, तो वहीं फिल्म गानों ने संगीत प्रेमियों के दिलों में जगह बना ली। इसका सबसे चर्चित गीत 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा था। कॉलेज के आखिरी दिन और भविष्य के सपनों को आवाज देता यह गाना आज भी मिलेनियल्स



38 साल पुराना ये गाना, जो आज भी हर बेटे को याद दिलाता है पिता का सपना

को अपने जवानी के दिनों में ले जाता है, जिन्होंने इसे पहली बार रेडियो, कैसेट या सिनेमाघर में सुना था। 'पापा कहते हैं' को उदित नारायण ने गाया, जबकि इसके बोल मशहूर गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखे। आनंद-मिलिंद ने इसका संगीत तैयार किया। गाने में कॉलेज से निकल रहे यंगस्टर के सपने, उसकी उम्मीदें और भविष्य को लेकर उत्साह दिखाई देता है। आमिर खान पर फिल्माया गया यह गाना कहानी के उस मोड़ से जुड़ा है, जब नौजवान अपनी जिंदगी की नई शुरुआत के बारे में सोचते हैं। 'पापा कहते हैं' गाने की लोकप्रियता की वजह सिर्फ इसकी धुन नहीं थी। इसके बोल उस पीढ़ी से सीधे जुड़े थे, जो पढ़ाई पूरी करके करियर बनाने और परिवार की उम्मीदों पर खरा उतरने का सपना देख रही थी। यही वजह रही कि यह गाने कॉलेज और यंगस्टर्स से जुड़े इवेंट में भी खूब सुनाई दिया।

मशहूर गायक कृष्णराज का 75 की उम्र में निधन

मशहूर गायक कृष्णराज का आज चेन्नई में निधन हो गया। वह 75 साल के थे। काफी दिनों से उनकी सेहत खराब थी। संगीत निर्देशक देवा के साथ अक्सर काम करने वाले कृष्णराज ने तमिल सिनेमा में 300 से अधिक गाने गाए थे। अपनी खास आवाज के लिए पहचाने जाने वाले गायक कृष्णराज ने तमिल फिल्म उद्योग को कई हिट गाने दिए। बताया जाता है कि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते आज चेन्नई में गायक का निधन हो गया है। कृष्णराज लोकप्रिय गानों में तिरुपति एजूमलाई वेंकटेशा, काथु अडिक्कुधु और सिर कुट्टु पोनालूम जैसे कई गाने शामिल हैं। फिल्म पोर्कालाम का गाना तंजावुर मन्नु एडुथु उन गानों में से एक है, जिसने उन्हें बहुत शोहरत दिलाई। साल 2000 के बाद के दौर में, उन्होंने परुथीवीरन फिल्म का गाना अय्ययो और कझुगु फिल्म का गाना आंबलैक्कुम

संगीतकार देवा के साथ किया था काम



वलसरवक्कम स्थित उनके आवास पर रखा गया है, ताकि आम लोग और फिल्म जगत के सदस्य उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि दे सकें। बता दें कि संगीतकार देवा का 17 अक्तूबर को निधन हो गया था। उन्हें तमिलनाडु सरकार ने राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी थी। देवा को रजनीकांत, तमिलनाडु के सीएम विजय और कमल हासन ने श्रद्धांजलि दी थी।

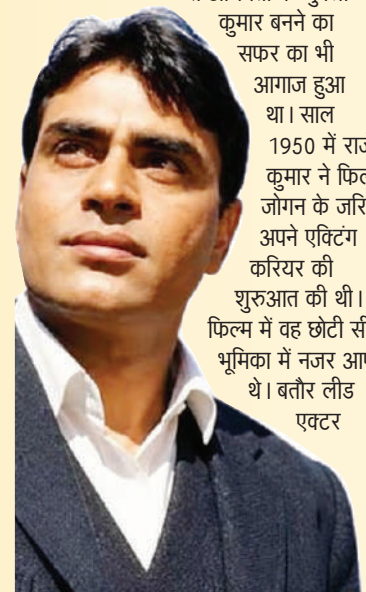
कुछ चीजें हैं, जहां मैं सहज नहीं हूँ: रश्मिका

शो कॉफी विद करण के नौवें सीजन में रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा पहुंचे। इस जोड़ी ने अपनी निजी जिंदगी से लेकर सिनेमा तक कई दिलचस्प मुद्दों पर बात की। इसी दौरान रश्मिका-विजय ने इंडस्ट्री में कॉस्ट्यूम की सीमाओं पर चर्चा की। उनका रिएक्शन पेड्री विवाद के बीच अभिनेत्रियों पर होने वाले दबाव का संकेत देता है। अभिनेत्री रश्मिका मंदाना ने काम के दौरान कुछ पर्सनल बाउंड्री बनाने के महत्व पर खुलकर बात की। उन्होंने माना कि वे हमेशा स्कैन दिखाने में कम्फर्टेबल नहीं होतीं। रश्मिका ने कहा कि कुछ किरदारों के लिए खास लुक्स की जरूरत हो सकती है। मगर, वे ज्यादा स्कैन शो के साथ सहज नहीं हैं। उन्होंने कहा, कुछ चीजें हैं, जहां मैं सहज नहीं हूँ। मुझे पता है कि कुछ कैरेक्टर्स को बिकिनी जैसी किसी चीज की जरूरत होती है, लेकिन मैं उसमें भी कहींगी कि मैं एक्सपोजिंग और स्कैन शो के साथ बहुत सहज नहीं हूँ। मैं उस तरह की इंसान नहीं हूँ। रश्मिका ने माना कि कमर्शियल फिल्मों में कभी-कभी ऐसे कॉस्ट्यूम की जरूरत होती है, जिन्हें पहनकर परफॉर्मर पूरी तरह से सहज महसूस न करें। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक्टरों को बिना डरे अपनी परेशानियां बतानी चाहिए। बाउंड्री बनानी चाहिए। एक्टरों ने कहा, जब आप कमर्शियल फिल्में करते हैं, तो ऐसे कॉस्ट्यूम होंगे, जिनमें आप पूरी तरह से कम्फर्टेबल नहीं होंगे। लेकिन साथ ही, कुछ लाइनें होती हैं, जो मैं अपने लिए बनाती हूँ। एक्टरों ने कहा, ज्यादातर फिल्मों में डायरेक्टर इससे सहमत होते हैं और मैं ऐसे लोगों के साथ ही काम करना पसंद करती हूँ। विजय देवरकोंडा ने कहा कि प्रोफेशनल दिखने के दबाव में महिलाओं के लिए किसी ऐसी चीज को मना करना मुश्किल हो सकता है, जो उन्हें असहज महसूस कराती हैं। पहले ही फिल्म साइन कर लेने के चलते उनसे उम्मीद की जाती है कि वे रोल की डिमांड के हिसाब से कुछ भी करेंगे। विजय ने कहा, उन सभी को एक सपोर्ट सिस्टम की जरूरत होती है जो उन्हें बताए कि यह ठीक है और आप अपनी बात पर अड़े रहें। ना कहें, क्योंकि लोग आपको ऐसा महसूस करा सकते हैं। मगर, आप एक एक्टर हैं। फिल्म पेड्री में जान्हवी कपूर के किरदार की सोशल मीडिया पर आलोचना हुई। दर्शकों ने इसे हद से ज्यादा बोल्ट बताया। कैमरा वर्क, रोमांटिक सीन और उनके फिजिकल अपीयरेंस पर फोकस करना भी विरोध का हिस्सा बन गया।

फिल्म पेड्री में जान्हवी कपूर के किरदार को लेकर रखी अपनी बात

71 साल पहले राजेंद्र कुमार की फिल्म ने थिएटर्स में जमाया था कब्जा

हिंदी सिनेमा के वेटरन एक्टर के बारे में जब भी बात की जाती है, तो दिलीप कुमार, देव आनंद, धर्मेन्द्र और राजेश खन्ना जैसे कई कलाकारों का जिक्र किया जाता है। लेकिन जिन्हें पुराने जमाने के सिनेमा की थोड़ी बहुत भी समझ है, उनके मालूम हो कि राजेंद्र कुमार का स्टारडम इन सबसे काफी जुदा था। जिसकी शुरुआत 71 साल पहले राजेंद्र कुमार की उस पारिवारिक कहानी फिल्म से हुई थी, जो 25 हफ्तों तक सिनेमाघरों में चली थी। उसी फिल्म से अभिनेता के जुबली कुमार बनने का सफर का भी आगाज हुआ था। साल 1950 में राजेंद्र कुमार ने फिल्म जोगन के जरिए अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी। इस फिल्म में वह छोटी सी भूमिका में नजर आए थे। बतौर लीड एक्टर



बॉलीवुड में डेब्यू करने में राजेंद्र कुमार को 5 साल का समय लगा, जब उनकी फिल्म वचन को 1955 में सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था। देवेंद्र गोयल द्वारा निर्मित और राज ऋषि द्वारा निर्देशित वचन एक फैमिली ड्रामा फिल्म थी। इस मूवी की कहानी फैस को काफी पसंद आई और राजेंद्र कुमार द्वारा निभाया गया किरदार किशोर का किरदार सिनेमा जगत में हर तरफ छा गया। आलम ये रहा है कि कमर्शियल तौर पर राजेंद्र की वचन सफल रही। आईएमडीबी की रिपोर्ट के अनुसार फिल्म वचन 25 हफ्तों से अधिक समय तक थिएटर्स में चली थी और इसी वजह से ये सिल्वर जुबली कहलाई। वचन के जरिए ही सिनेमा जगत में राजेंद्र कुमार के जुबली कुमार बनने की जर्नी की शुरुआत हुई है और वह रातोंरात स्टार बन गए। फिल्म में राजेंद्र के अलावा गीता बाली, मदन पुरी और परवीन पॉल जैसे कई कलाकारों ने अहम भूमिकाओं को अदा किया था। 71 साल पहले आई फिल्म वचन की अपार सफलता के बाद राजेंद्र कुमार की किस्मत चमक गई और उनको बॉलीवुड में एक मुख्य अभिनेता के रूप में पहचान मिली। जिसकी

25 हफ्तों तक चली थी फैमिली ड्रामा

फैस को काफी पसंद आई और राजेंद्र कुमार द्वारा निभाया गया किरदार किशोर का किरदार सिनेमा जगत में हर तरफ छा गया। आलम ये रहा है कि कमर्शियल तौर पर राजेंद्र की वचन सफल रही। आईएमडीबी की रिपोर्ट के अनुसार फिल्म वचन 25 हफ्तों से अधिक समय तक थिएटर्स में चली थी और इसी वजह से ये सिल्वर जुबली कहलाई। वचन के जरिए ही सिनेमा जगत में राजेंद्र कुमार के जुबली कुमार बनने की जर्नी की शुरुआत हुई है और वह रातोंरात स्टार बन गए। फिल्म में राजेंद्र के अलावा गीता बाली, मदन पुरी और परवीन पॉल जैसे कई कलाकारों ने अहम भूमिकाओं को अदा किया था। 71 साल पहले आई फिल्म वचन की अपार सफलता के बाद राजेंद्र कुमार की किस्मत चमक गई और उनको बॉलीवुड में एक मुख्य अभिनेता के रूप में पहचान मिली। जिसकी

बदौलत करियर में आगे चलकर 60 के दशक में उन्होंने 6 से अधिक लगातार सिल्वर जुबली फिल्म देकर हिंदी सिनेमा में अपनी धाक जमाई थी।



बिजली निजीकरण को लेकर हरियाणा में बवाल

» फैसले को रद्द करे सरकार : दीपेंद्र हुड्डा

4पीएम न्यूज नेटवर्क

चंडीगढ़। हरियाणा में बिजली के निजीकरण को लेकर कांग्रेस ने भाजपा पर निशाना साधा है। कांग्रेस सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने गुरुग्राम और नूंह में बिजली वितरण का निजी लाइसेंस देने के फैसले को तुरंत रद्द करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि बिजली कर्मचारियों की तीन दिवसीय हड़ताल से कई इलाकों में बिजली संकट गहरा गया है। सरकार कर्मचारियों और इंजीनियरों के संयुक्त मोर्चे से बातचीत कर समाधान निकाले ताकि व्यवस्था ठप होने से बच सके।

दीपेंद्र ने सवाल उठाया कि महज एक करोड़ रुपये की पूंजी और बिजली वितरण

कांग्रेस ने भाजपा सरकार के फैसले पर उठाए सवाल

का पर्याप्त अनुभव नहीं रखने वाली इलेवन पावर कंपनी को लाइसेंस किस आधार पर दिया गया। गुरुग्राम और नूंह से बिजली निगम को सालाना करीब 9200 करोड़ रुपये का राजस्व मिलता है। दीपेंद्र ने तंज कसा कि योजना इतनी अच्छी है तो मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी इसे पहले अपने विधानसभा क्षेत्र लाडवा में लागू करके दिखाएं।

कांग्रेस विधायक ने कर्मचारियों की हड़ताल का किया समर्थन

नारनौद से कांग्रेस विधायक जस्सी पेटवाड़ ने हरियाणा सरकार की बिजली वितरण व्यवस्था के निजीकरण की योजना पर सवाल उठाते हुए बिजली विभाग के कर्मचारियों की हड़ताल का पूर्ण समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार को बिजली विभाग से सालाना करीब 20,000 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होता है, जिसमें अकेले नूंह और गुरुग्राम जिलों से 9,200 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई होती है। विधायक ने सवाल उठाया कि जब बिजली विभाग प्रदेश के लिए इतना बड़ा राजस्व जुटा रहा है, तो फिर इसकी व्यवस्था निजी कंपनी को सौंपने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है? विधायक जस्सी पेटवाड़ ने कहा कि संबंधित कंपनी का गठन महज एक साल पहले हुआ बताया जा रहा है। ऐसे में सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि जिस कंपनी के पास बिजली वितरण के क्षेत्र में पर्याप्त अनुभव नहीं है और जिसके आवश्यक संसाधनों, स्वरूपाव की क्षमता तथा आर्थिक समर्थता को लेकर सवाल उठ रहे हैं, उसे इतनी बड़ी जिम्मेदारी किस आधार पर सौंपी जा रही है। उन्होंने कहा कि 'बिना पर्वी, बिना खर्ची' का दावा करने वाली भाजपा सरकार को इस फैसले की पूरी प्रक्रिया जनता के सामने रखनी चाहिए। सरकार बताए कि कंपनी का ध्येय किन मानकों के आधार पर किया गया है, उसकी तकनीकी और वित्तीय क्षमता का आकलन कैसे हुआ तथा प्रदेश की बिजली व्यवस्था को लेकर इतना बड़ा निर्णय लेने की जरूरत क्यों पड़ी।

इम्स के मुद्दे पर सियासी घमासान

आमने-सामने केजरीवाल और अमित शाह

» आप संयोजक ने बीजेपी शासित राज्यों पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से इम्स की समस्या पर सवाल पूछा। उन्होंने बीजेपी शासित राज्यों में इस समस्या के समाधान में देरी पर अपनी चिंता व्यक्त की। केजरीवाल ने विशेष रूप से बिहार, गुजरात, राजस्थान और गोवा में इम्स समस्या खत्म न होने का कारण पूछा। यह सवाल अमित शाह के पंजाब दौरे के बाद आया है। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने मंगलवार को पंजाब दौरे के दौरान इम्स समस्या से जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों से मुलाकात की।

उन्होंने कहा कि जीवन में उन्हें इतना गहरा दुख कभी नहीं हुआ। शाह ने पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार की कड़ी आलोचना भी की। उन्होंने आरोप लगाया कि आप सरकार सत्ता में आने के तीन महीने के भीतर इम्स कारोबार खत्म करने का वादा पूरा करने में नाकाम रही है। शाह ने पंजाब में इम्स के कारोबार को रोकने में सरकार की विफलता पर जोर दिया। आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर एक पोस्ट



के जरिये अमित शाह की टिप्पणी का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि बिहार, गुजरात, राजस्थान और गोवा में बीजेपी की ही सरकारें हैं। केजरीवाल ने पूछा कि उन राज्यों में इम्स की समस्या खत्म क्यों नहीं हुई है। उन्होंने यह भी सवाल किया कि क्या उन राज्यों के लिए कोई समय-सीमा निर्धारित नहीं है। अपने पंजाब दौरे के दौरान अमित शाह ने राज्य के लोगों को भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा कि 31 दिसंबर, 2029 तक इम्स के कारोबार को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाएगा। शाह ने गुरदासपुर, संगरूर और मानसा में पीडित परिवारों से मुलाकात की। उन्होंने भगवंत मान सरकार से दो विशिष्ट मामलों को सीबीआई को सौंपने का आग्रह किया। ये मामले संगरूर और गुरदासपुर से संबंधित थे, जिनकी जांच सीबीआई द्वारा की जानी है।

चोट के चलते दूसरे टी20 से ईशान किशन बाहर

» भारत को बड़ा झटका:

न्यूजीलैंड से मैच कल, वैभव को मिल सकता है मौका

4पीएम न्यूज नेटवर्क

क्राइस्टचर्च। न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टी20 से पहले भारतीय टीम को बड़ा झटका लगा है। ईशान किशन चोट के कारण शनिवार को होने वाले दूसरे टी20 से बाहर हो गए हैं। उन्हें यह चोट सीरीज के पहले मुकाबले के दौरान लगी थी। अब ईशान की गैरमौजूदगी में सवाल है कि क्या युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को मौका मिलेगा? बीसीसीआई ने शुक्रवार को ईशान के दूसरे टी20 से बाहर होने की पुष्टि की। बोर्ड के अनुसार, ईशान दाएं पैर की मांसपेशियों में हल्की चोट से जूझ रहे हैं। इसे लो-ग्रेड राइट एंडडक्टर स्ट्रेन कहा जाता है। उन्हें सीरीज के पहले टी20 मैच के दौरान दाएं पैर की मांसपेशियों में हल्की चोट लगी थी।

बोर्ड ने आगे बताया, बीसीसीआई की मेडिकल टीम उनकी रिकवरी पर नजर रख रही है। हालांकि, ईशान को पूरी तरह फिट होने

में कितना समय लगेगा, इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच दूसरा टी20 मैच हैंगले ओवल में खेला जाना है। ईशान नंबर-तीन के बल्लेबाज हैं, लेकिन गुरुवार को उन्हें बल्लेबाजी क्रम में नीचे भेजा गया। इससे प्रशंसकों के बीच चर्चा शुरू हो गई। शुरुआत में इसे भारतीय टीम का एक और प्रयोग माना गया, क्योंकि तिलक वर्मा अपने पुराने नंबर-तीन के स्थान पर लौट आए थे। ईशान की गैरमौजूदगी में वैभव खेलेंगे, लेकिन प्लेइंग-11 के एलान तक इंतजार करना होगा। वैभव को पहले टी20 की प्लेइंग इलेवन में शामिल नहीं किया गया था। नागोया में एशियन

गेम्स के फाइनल के बाद से वैभव ने कोई टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबला नहीं खेला है। वैभव को टीम में मौका नहीं मिलने पर मीडिया और क्रिकेट जगत में सवाल उठ रहे थे। इसके बाद कप्तान श्रेयस अय्यर और मुख्य कोच गंभीर ने युवा बल्लेबाज से धैर्य रखने को कहा था।

श्रीलंका ने वनडे का दूसरा बड़ा लक्ष्य किया हासिल

रावलपिंडी। श्रीलंका ने बल्लेबाजों के दमदार प्रदर्शन की मदद से त्रिकोणीय सीरीज के मुकाबले में इंग्लैंड को दो विकेट से हराया। इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए कप्तान हैरी ब्रूक के दोहरे शतक की मदद से 50 ओवर में चार विकेट पर 429 रन बनाए। जवाब में पवन रत्नानायके, अविष्का फर्नांडो, दासुन शनाका और जनिथ लियानागे की दमदार पारी से श्रीलंका ने 49.5 ओवर में आठ विकेट पर 430 रन बनाकर रोमांचक जीत दर्ज की। श्रीलंका ने इस तरह वनडे इतिहास का दूसरा बड़ा रन चेज किया। श्रीलंका ने वनडे में सबसे बड़े रन चेज के मामले भारतीय टीम को पीछे छोड़ दिया है। भारत ने इसी साल वेस्टइंडीज के खिलाफ गुवाहाटी में खेले गए मुकाबले में 406 रनों का लक्ष्य सफलतापूर्वक हासिल किया था जो वनडे का दूसरा सबसे बड़ा रन चेज था। लेकिन श्रीलंका ने इस मामले में भारत को पीछे छोड़ और 50 ओवर के प्रारूप का दूसरा सबसे बड़ा रन चेज कर लिया। दक्षिण अफ्रीका के नाम वनडे में सबसे बड़ा रन चेज का रिकॉर्ड है। दक्षिण अफ्रीका ने 2006 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 435 रनों का लक्ष्य चेज किया था।

11 दिन सिस्टम को छकाने के बाद खामोशी से जेल की कोठरी में पहुंची श्रद्धा

» शिवा शर्मा हत्याकांड: कोर्ट ने तीनों आरोपियों को 10 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी के बहुचर्चित कारोबारी शिवा शर्मा हत्याकांड में आखिरकार मुख्य आरोपी श्रद्धा दुबे, उसकी बहन रश्मि दुबे और झाइवर दानिश को जेल भेज दिया गया। गुरुवार को हजरतगंज पुलिस ने तीनों आरोपियों को मेडिकल परीक्षण के बाद कड़ी सुरक्षा के बीच अदालत में पेश किया। सुनवाई के बाद अदालत ने तीनों को 10 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश दिया। इसके बाद तीनों को लखनऊ जिला कारागार भेज दिया गया।

शिवा शर्मा की मौत के बाद से फरार चल रही श्रद्धा दुबे को एसटीएफ ने 20



अक्टूबर को महाराष्ट्र के नागपुर से उसकी बहन और झाइवर के साथ गिरफ्तार किया था। ट्रांजिट रिमांड पर लखनऊ लाने के बाद पुलिस ने तीनों से घटना और फरारी के दौरान की गतिविधियों को लेकर विस्तृत पूछताछ की। तीनों आरोपियों के जेल जाने के बाद अब पुलिस की जांच का दायरा

घंटों की पूछताछ में कई सवालों पर श्रद्धा ने साधी चुप्पी

हजरतगंज पुलिस ने श्रद्धा दुबे से कई घंटे तक पूछताछ की। जांच टीम ने नौ अक्टूबर की घटना, शिवा शर्मा की मौत से पहले पलैट में हुई गतिविधियों और फरारी के दौरान मिले सहयोग को लेकर सवाल किए। सूत्रों के मुताबिक, श्रद्धा ने कई सवालों के जवाब देने से परहेज किया। वह बार-बार खुद को निर्दोष बताते हुए अपने अधिवक्ता से बात करने की बात कहती रही। पुलिस ने रश्मि दुबे और दानिश से भी पूछताछ कर घटनाक्रम की कड़ियां जोड़ने का प्रयास किया।

उनके मददगारों तक पहुंच गया है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि करीब 11 दिनों की फरारी के दौरान श्रद्धा दुबे और उसके साथियों को किन लोगों ने आर्थिक सहायता दी, कहा-कहां ठहराया और एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने में किसकी भूमिका रही। डीसीपी मध्य अप्रिंत विजयवर्गीय के मुताबिक, आरोपियों के फरारी के दौरान ठहरने के स्थानों और मदद करने वालों की पहचान की जा रही है।

आप-कांग्रेस पंजाब के दुश्मन : बादल

» भाजप व शिअद के बीच गठबंधन को लेकर भी चर्चाएं जारी

4पीएम न्यूज नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब विधानसभा चुनाव 2027 को लेकर राज्य में सियासी सरगमी तेज है। भाजपा और शिअद के बीच गठबंधन को लेकर भी चर्चाएं जारी हैं। इस बीच शिअद अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने बीजेपी के साथ अलायंस पर बड़ा बयान दिया है। उनका कहना है कि वह एक जैसी सोच रखने वाले दलों के साथ गठबंधन के लिए तैयार हैं। वहीं, सतारूढ़ आम आदमी पार्टी और विपक्षी कांग्रेस को लेकर सुखबीर सिंह बादल ने दावा किया है कि दोनों ही दल पंजाब की दुश्मन हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बीते दिन पंजाब में एनडीए की सरकार बनने के दावे के बाद शिरोमणि अकाली दल ने कहा है कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी को



छोड़कर वह अन्य दलों से गठबंधन के लिए तैयार हैं। दूसरी ओर, आज राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया से अकाली दल के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और मुख्यमंत्री भगवंत मान को हटाने की मांग की। मुलाकात के बाद शिरोमणि अकाली दल अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने कहा कि अकाली दल एक क्षेत्रीय पार्टी है और वह सरकार में रहे या न रहें, पंजाब की बेहतरी के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

अरुणाचल में चीनी सैनिकों के साथ टकराव पर आईटीबीपी डीजी के बयान पर बवाल

» कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष ने सरकार के दावा पर उठाए सवाल
» चीन के सामने घुटने टेकते रहते हैं प्रधानमंत्री : जयराम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
नई दिल्ली। मोदी सरकार चीन के साथ सबकुछ ठीक है के दावे करती पर आईटीबीपी डीजी शत्रुजीत कपूर के इस बयान कि अरुणाचल प्रदेश में चीनी सैनिकों के साथ टकराव जारी है को लेकर सियासी घमासान मच गया है। पूरे विपक्ष ने मोदी सरकार को चौतरफा प्रहार शुरू कर दिया है। बता दे आईटीबीपी डीजी ने कहा है कि आज भी भारत और चीन के बीच टकराव की नौबत आती है। डीजी के इस बयान के बाद कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर हमला बोला है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा है। साथ ही सवाल पूछा है कि सीमा पर जारी तनाव के बावजूद चीन के प्रति

मेक इन इंडिया' अब 'इम्पोर्ट फ्रॉम चाइना' बन गया है

यह नरमी और आर्थिक मोर्चे पर बढ़ती निर्भरता आखिर किस तरह का राष्ट्रवाद है। जयराम रमेश ने आईटीबीपी डीजी का बयान शेयर करते हुए लिखा, जहां एक तरफ चीन के सामने घुटने टेकने वाले प्रधानमंत्री की ओर से लगातार रियायतें देने का सिलसिला जारी है, इसी बीच आईटीबीपी के महानिदेशक ने अरुणाचल प्रदेश में चीनी पीएलए के साथ भारतीय सीमा के भीतर हालिया टकरावों में आईटीबीपी के प्रदर्शन की सराहना की है, जो बिल्कुल सही भी है। लेकिन प्रधानमंत्री और उनका पूरा तंत्र इस गंभीर मुद्दे पर चुप्पी साधे बैठा है। ताकसिंग में टकराव के बाद पिछले महीने अरुणाचल प्रदेश के वाचा और दमाई में कोर कमांडर स्तर की बातचीत हुई। स्थानीय लोगों ने



अरुणाचल सीमा पर चल रहे टकराव में कमांडो एक्टिव : शत्रुजीत

अरुणाचल सीमा पर चल रहे टकराव में आईटीबीपी के कमांडो सक्रिय हैं। उन्होंने कहा, हमारे हाल ही में गठित शौर्य कमांडो ने इसमें बेहतरीन भूमिका निभाई है। आईटीबीपी को एक माउंटन गुरिल्ला फोर्स के रूप में बनाया गया था और 2004 में हमें चीन के साथ लगाती सीमा की सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने आगे कहा, हमें अपने मूल काम को छोड़ने की जरूरत नहीं है। सेना से अलग, एक विशेष हाई एल्टीट्यूड माउंटन फाइटिंग फोर्स (ऊंचाई वाले पहाड़ी इलाकों में लड़ने वाला बल) तैयार की जा रही है। जल्द ही हमारे पास शौर्य कमांडो की एक पूरी बटालियन होगी। ऊंचाई वाले इलाकों में तैनात होना हमारी ताकत है। कपूर ने यह बात राजस्थान के अलवर स्थित सेंट्रल ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कही।

बताया है कि लद्दाख की तरह एक बार फिर गश्त के कुछ बिंदु हमारे हाथ से निकल गए हैं। चीन अरुणाचल

प्रदेश के हमारे शहरों के नाम बदलता जा रहा है और 60,000 मेगावाट का एक बांध बना रहा है, जो हमारी पारिस्थितिकी और जल सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है। उन्होंने लिखा, चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 2025-26 में रिकॉर्ड 112 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो पिछले साल 99 अरब डॉलर था। इससे कई उद्योगों में हमारे एमएसएमई बुरी तरह तबाह हुए हैं। 'मेक इन इंडिया' अब 'इम्पोर्ट फ्रॉम चाइना' बन गया है। इतना बड़ा व्यापार घाटा हमारी आर्थिक सुरक्षा के लिए भी एक गंभीर चुनौती है। भारत आज भी 19 जून 2020 को चीन को दी गई प्रधानमंत्री की उस कुख्यात क्लीन चिट की कीमत चुका रहा है।

सुरक्षा बलों को नागरिकों के प्रदर्शन को रोकने के लिए तैनात किया जा रहा: दिपके

सीजेपी नेता अभिजीत दीपके ने अब सरकार पर हमला बोला है। अभिजीत दीपके ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर किया है। दीपके ने लिखा, हाँ, क्योंकि जिन सुरक्षा बलों को हमारी सीमाओं की रक्षा करनी चाहिए, उन्हें नागरिकों के विरोध-प्रदर्शन को रोकने के लिए तैनात किया जा रहा है। उन्होंने आगे लिखा, मोदी अपने ही देशवासियों के खिलाफ सुरक्षा बलों का इस्तेमाल करके राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं। प्राथमिकता हमारी सीमाओं को सुरक्षित करने की होनी चाहिए, न कि शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शनों को दबाने के लिए दिल्ली को एक किले में बदलने की।



हमारे 20 बहादुर जवानों की शहादत के बाद प्रधानमंत्री ने कहा था, ना कोई वहां हमारी सीमा में घुस आया है और न ही कोई घुसा हुआ है, न ही हमारी कोई पोस्ट किसी दूसरे के कब्जे में है।

राजस्थान में खादू श्याम मंदिर से लौट रहे चार श्रद्धालुओं की मौत
» टायर फटने से खाई में गिरी कार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
जयपुर। राजस्थान के दौसा-मनोहरपुर राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-148) पर रायसर के पास शुक्रवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। खादू श्याम मंदिर में दर्शन कर लौट रहे श्रद्धालुओं की कार का टायर फटने से वाहन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गहरी खाई में जा गिरा। हादसे में कार सवार चार लोगों की मौत के पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी मृतक उत्तर प्रदेश के आगरा के रहने वाले थे। हादसा शुक्रवार सुबह करीब 6 बजे रायसर क्षेत्र में हुआ। हाईवे से गुजरते समय अचानक कार का टायर फट गया। इससे चालक वाहन पर नियंत्रण खो बैठा और कार सड़क किनारे गहरी खाई में जा गिरी। दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी और राहत कार्य शुरू किया। ग्रामीणों ने मशक्कत कर कार में फंसे लोगों को बाहर निकाला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल पहुंचाया। वहीं, मृतकों के शवों को मोर्चरी में रखवाया गया। रायसर थाना प्रभारी राजपाल सिंह के अनुसार, प्रारंभिक जांच में हादसे का कारण कार का टायर फटना सामने आया है। दुर्घटना में जान गंवाने वालों की पहचान अतुल, रूपेश, मुकुल और शिवा के रूप में हुई है। चारों उत्तर प्रदेश के आगरा के निवासी थे और खादू श्याम धाम में दर्शन करने के बाद घर लौट रहे थे। हादसे में राहुल और अर्पित गंभीर रूप से घायल हुए हैं। दोनों का अस्पताल में उपचार चल रहा है। हादसे के बाद दौसा-मनोहरपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर वाहनों की लंबी कतारें लग गई और यातायात बाधित हो गया।

विजयन व परिवार की अपील पर 26 को सुनवाई करेगा हाईकोर्ट

» सीएमआरएल रिश्वत मामला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
तिरु वंअंतपुरम्। केरल उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को पूर्व मुख्यमंत्री पिनराई विजयन और उनके परिवार के सदस्यों की उन अपीलों पर 26 अक्टूबर को सुनवाई करने का फैसला किया, जिनमें एकल न्यायाधीश के सीएमआरएल रिश्वत मामले में उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने के आदेश को चुनौती दी गयी है। विजयन, उनकी बेटी वीणा टी. और दामाद एवं विधायक पी. ए. मोहम्मद रियास की ओर से दायर अपीलें न्यायमूर्ति सतीश निनान और न्यायमूर्ति पी. कृष्ण कुमार की खंडपीठ के समक्ष आईं। पीठ ने मामले में आगे की सुनवाई के



लिए सोमवार की तारीख तय की। विजयन के वकील ने दलील दी कि उच्चतम न्यायालय ने सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (वीएसीबी) की जांच पर केवल सीमित अवधि के लिए रोक लगाई है। हालांकि, उच्च न्यायालय ने कहा कि अपीलों पर सोमवार को

ईडी की रिपोर्ट के आधार पर वीएसीबी को मिला था मामला दर्ज करने का निर्देश

नौ अक्टूबर को उच्च न्यायालय ने राज्य पुलिस को सौंपी गई ईडी की रिपोर्ट के आधार पर वीएसीबी को मामला दर्ज करने का निर्देश दिया था। इसके बाद दो प्राथमिकी दर्ज की गई, जिसके बाद ईडी ने विजयन और उनके परिवार के खिलाफ पीएमएलए के तहत अलग-अलग जांच शुरू की। उच्च न्यायालय ने 15 अक्टूबर को विजयन, वीणा और रियास की उन अर्जियों को खारिज कर दिया था, जिनमें उन्होंने एकल न्यायाधीश के आदेश के खिलाफ अपील करने की अनुमति मांगी थी। इसके बाद उन्होंने उच्चतम न्यायालय का रुख किया, जिसने वीएसीबी की जांच पर एक सप्ताह के लिए रोक लगाते हुए उन्हें उच्च न्यायालय की खंडपीठ के समक्ष अपील दायर करने का निर्देश दिया।

विचार किया जाएगा। पिछले महीने ईडी ने राज्य पुलिस को पत्र लिखकर विजयन और उनके परिवार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का अनुरोध किया था।

पंजाब विधानसभा में दूसरे दिन भी हंगामा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
चंडीगढ़। पंजाब में नशा विरोधी कार्यकर्ता परविंदर सिंह झोटा की हत्या का मामला थमने का नाम नहीं ले रहा है। इसकी गूंज पंजाब विधानसभा के सत्र के पहले दिन भी सुनाई दी। अब लगातार दूसरे दिन भी सदन में झोटा के केस को लेकर हंगामे का माहौल देखने को मिल रहा है। पंजाब विधानसभा के सत्र के दूसरे दिन कार्यवाही शुरू होने से पहले कांग्रेस के तमाम विधायक गले में काली पट्टियां बांधकर विधानसभा में प्रवेश किया। एक तरफ विपक्ष इस मामले को लेकर लगातार सत्ता पक्ष पर हमलावर है, तो दूसरी तरफ झोटा के परिजन मांग न पूरी होने तक 10 दिन बाद भी पोस्टमार्टम के लिए सहमती देने से इनकार कर रहे हैं। परिवार मुख्यमंत्री भगवंत मान और डीजीपी गौरव यादव के



परविंदर झोटा मर्डर पर विपक्ष ने आप सरकार को घेरा

इस्तीफे की मांग पर अड़े हैं। प्रश्नकाल चल रहा है मगर कांग्रेस विधायक सदन में लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं और मुख्यमंत्री भगवंत मान के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। सदन में लगातार कांग्रेस के विधायक नारेबाजी कर रहे हैं ड्रग्स और कानून व्यवस्था के मुद्दे पर नारेबाजी कर रहे हैं। बता दें कि परिजनों की मांग पर राज्य सरकार ने मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी है, सीबीआई ने

मामले की जांच तेजी से कर रही है। जांच सौंपने के दूसरे सीबीआई की टीम ने आरोपी केमिस्ट स्टोर मालिक अश्विनी कुमार और उसके चचेरे भाई विपिन गर्ग के घरों में सर्च ऑपरेशन तक किया। सीबीआई ने मामले को लेकर झोटा पिता, माता और उनकी पत्नी मनप्रीत से भी मुलाकात कर जांच से जुड़े मुद्दे पर बात की। सीबीआई पहले ही इस मामले में एफआईआर दर्ज कर चुकी है और

विपक्ष ने की मान के इस्तीफे की मांग

नेता विपक्ष प्रताप सिंह बाजवा ने कहा कि एटी इग एक्टिविस्ट परविंदर सिंह झोटा के परिवार ने मुख्यमंत्री भगवंत मान के इस्तीफे की मांग की है और आज कांग्रेस भी भगवंत मान के इस्तीफे की मांग सत्र में करेगी। उन्होंने कहा कि सरकार की नाकामियों के खिलाफ काली पट्टियां उन्हीं गले में लटकाई हैं। विधानसभा की कार्यवाही शुरू होते ही कांग्रेस के विधायकों ने सदन में नारेबाजी शुरू कर दी है।

ऐसे दुकानों की सूची तैयार की है तो मादक प्रदार्थों की सप्लाय करती हैं। हालांकि, झोटा के परिजनों का कहना है कि जब तक उनकी मांगें नहीं मानी जाती वो उनके शव का पोस्टमार्टम करने की अनुमति नहीं देंगे। परिवार की मांगों में पीजीआई चंडीगढ़ के डॉक्टरों से पोस्टमार्टम, सीएम और डीजीपी के इस्तीफे जैसी मांगें शामिल हैं। बता दें कि 13 अक्टूबर को झोटा को मानसा में एक मेडिकल स्टोर के अंदर आरोपी अश्विनी ने गोली मारी थी।